Buddhism in India - Origin & Growth, Life of Buddha

Dr. Dilip Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Ancient Indian History & Archaeology,
Patna University, Patna
Paper – 104 (2), History of Indian Buddhism, Sem. – IV

भारत में बौद्ध धर्म की उत्पत्ति :-

भगवान बुद्ध के अवतरण युग में सर्वत्र अवांछनियता का बोलबाला था। धर्म का आडम्बर ओढ़कर अधर्म को बढ़ावा मिल रहा था। भारतीय धर्म अपना मानव धर्म जैसा शाश्वत स्वरुप खो चुका था। अंधविश्वासों और रुढियों को ही धर्म का प्रर्यायवाची माना जाने लगा था। बौद्ध धर्म के उदय के निम्न कारण थे :-

आर्थिक कारण - तत्कालीन समय में नयी कृषिमूलक अर्थव्यवस्था तथा व्यापार वाणिज्य का तेजी से विकास हो रहा था लेकिन वैदिक धर्म इस कार्य में बाधा पंहुचा रहा था। वैदिक धर्म में बलि जैसी प्रथा के कारण कृषि एवं सम्बंधित कार्य हेतु पशुओं कि कमी हो रही थी। वैदिक धर्म कमीशन (सूदखोरी) की निंदा करता था जबकि इस समय यह एक प्रमुख जरुरत बन चुका था। ऐसे में बौद्ध धर्म के प्रति लोगों का रुझान बढ़ा।

सामाजिक कारण - तत्कालीन समाज में वर्णव्यवस्था कर्ममूलक न रह कर जन्ममूलक रह गई थी। ऊपर के तीनो वर्गों कि अपेक्षा शूद्रों को बहुत काम तरह के अधिकार दिए गए थे। इससे शुद्र वर्ग में काफी असंतोष था। वर्ण व्यवस्था में तीसरे दर्जे पर स्थान प्राप्त करने वाले वैश्य भी संतुष्ट नहीं थे। बदलते अर्थव्यवस्था में उनकी आर्थिक स्थिति काफी बेहतर हुई थी लेकिन वर्ण व्यवस्था के तहत उन्हें भी काम अधिकार था। बौद्ध धर्म में उन्हें अपनी स्थिति बेहतर दिखायी दी, ऐसे में उन्होंने इसे फलने - फूलने में काफी सहायता प्रदान की।

धार्मिक कारण - ब्राह्मण धर्म में प्रारंभ में सादगी थी लेकिन उतर वैदिक काल आते - आते इसमें कर्म - कांड, तंत्र - मन्त्र, बलि आदि हावी हो गए। इससे धार्मिक जीवन जटिल हो गया। फलतः उसका विरोध किया गया और बौद्ध धर्म को प्रोत्साहन मिला।

इन सभी कारणों से बौद्ध धर्म का भारत में उदभव हुआ।

बौद्ध धर्म का विकास :-

बौद्ध धर्म की उत्पत्ति के बाद इसे कई शासकों का संरक्षण प्राप्त हुआ, जिसके परिणामस्वरुप बौद्ध धर्म का विस्तार भारत के अतिरिक्त दक्षिण एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया तथा

सुदूर पूर्व के देशों में संभव हो सका। बौद्ध धर्म के विस्तार में सम्राट अशोक की भूमिका अति महत्वपूर्ण थी। अलग-अलग समय काल में 4 प्रमुख बौद्ध संगीतियों का आयोजन किया गया।

प्रथम बौद्ध संगीति - प्रथम बौद्ध संगीति राजगृह में आयोजित की गयी थी, इसका अध्यक्ष महाकस्सप था। इसका आयोजन 483 ईसा पूर्व अजातशत्रु के कार्यकाल में किया गया था। इस संगीति में विनय और धर्म का संग्रह किया गया। इसमें बुद्ध की शिक्षाओं का संकलन किया गया था। और उन्हें सुत्त व विनय नामक दो पिटकों में वर्गीकृत किया गया।

द्वितीय बौद्ध संगीति - द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन 383 ईसा पूर्व वैशाली में सुबुकामी की अध्यक्षता में किया गया था। उस समय कालाशोक मगध का शासक था। इस संगीति में बौद्ध धर्म के विभाजन महासंघिक और स्थविरवाद में हो गया।

तृतीय बौद्ध संगीति - तृतीय बौद्ध संगीति पाटलिपुत्र में सम्राट अशोक के कार्यकाल में 247 ईसा पूर्व आजोयित की गयी। इसमें अभिधम्म पिटक को जोड़ा गया, तथा कथावस्तु का संकलन किया गया। इस संगीति में स्थाविरवाद सम्प्रदाय का प्रभुत्व था। मोग्लिपुत्ततिस्य इस संगीति का अध्यक्ष था।

चौथी बौद्ध संगीति - चतुर्थ बौद्ध संगीति कश्मीर के कुंडलवन में 102 ईसा पूर्व में हुई इस संगीति का अध्यक्ष वासुमित्र था, जबकि उपाध्यक्ष अश्वघोष था। यह संगीति सम्राट कनिष्क के कार्यकाल में हुई। इस संगीति में बौद्ध धर्म हीनयान और महायान नामक दो सम्प्रदायों में बंट गया। इस दौरान संस्कृत भाषा का उपयोग वृहत स्तर पर किया गया। इस दौरान विभाषाशास्त्र नामक ग्रन्थ की रचना की गयी। यह अंतिम बौद्ध संगीति थी।

बौद्ध धर्म के प्रमुख सम्प्रदाय (थेरवाद/हीनयान) - हीनयान अथवा थेरवाद सम्प्रदाय में वे लोग शामिल हैं जो प्रमुखतः रूढ़ीवादी विचारधारा से सम्बंधित हैं। वे बुद्ध की शिक्षाओं को ज्यों का त्यों पालन करने में विशवास रखते हैं। वे बुद्ध की शिक्षा परिवर्तन के पक्षधर नहीं थे। इस सम्प्रदाय के अनुसार बुद्ध महापुरुष अवश्य हैं परन्तु वे देवता नहीं हैं। इस सम्प्रदाय के अनुयायी बुद्ध की पूजा नही करते। इस मत की उत्पत्ति कश्मीर में हुई थी, यह सौतांत्रिक तंत्र मन्त्र से सम्बंधित था। इस साम्प्रादय में साधना अत्याधिक कठोर थी। हीनयान सम्प्रदाय में भिक्षु जीवन जीने पर बल दिया जाता है। धर्मत्रात, घोषक, वसुमित्र, बुद्धदेव इत्यादि इस संप्रदाय के प्रमुख आचार्य थे।

हीनयान सम्प्रदाय में बुद्ध के जीवन से चार पशु जुड़े हुए हैं। बुद्ध के गर्भ में आने का प्रतीक हाथी को माना जाता है, यौवन का प्रतीक सांड, गृह त्याग का प्रतीक घोडा और समृद्धि का प्रतीक शेर को माना जाता है। आगे हीनयान भी दो सम्प्रदायों वैभाष्क और सौत्रान्तिक में बंट गया।

हीनयान के अन्य मुख्य सम्प्रदाय निम्नलिखित हैं :

- स्थाविरवादी
- सर्वास्तिवादी
- समित्या

महायान सम्प्रदाय - महायान सम्प्रदाय के मतानुसार निर्वाण के लिए व्यक्ति को किसी गुरु की आवश्यकता पड़ती है। प्रेरणा और सहायता के लिए बोधिसत्व को माना जाता है, बोधिसत्व को निर्वाण प्राप्त होते हैं। महायान बौद्ध मत के दो अन्य सम्प्रदाय हैं – शून्यवाद और माध्यमिका एवं विज्ञानवाद या योगाचार।

शून्यवाद - इस मत के प्रवर्तक नागार्जुन थे, उनकी प्रसिद्ध रचना माध्यमिककारिका है। शून्यवाद से तात्पर्य विचार शून्यता व अस्तित्व शून्यता से है। चन्द्रकीर्ति, शांतिदेव, आर्यदेव और शांतिरक्षित इस मत के प्रमुख विद्वान थे। बुद्धपालित और भाववि‌वेक पांचवी सदी में शून्यवाद के महत्वपूर्ण भाषाकार थे।

विज्ञानवाद - विज्ञानवाद मत का विकास तीसरी सदी में मैत्रेयनाथ द्वारा किया गया था। यह मत केवल विज्ञान की ही एक मात्र सत्ता को स्वीकार करता है। इसमें योगाभ्यास और आचरण पर विशेष बल दिया गया है। असंग द्वारा लिखा गया सूत्रलंकार इस धर्म से सम्बंधित प्राचीनतम ग्रन्थ है। इसका सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ लंकावतार सूत्र है।

बोधिसत्व - दस पारमिताओं का पूर्ण पालन करने वाला बोधिसत्व कहलाता है। बोधिसत्व का लक्ष्य बुद्धत्व को प्राप्त होना है। तिब्बती बौद्ध धर्म के अनुसार, बोधिसत्व मानव द्वारा जीवन में प्राप्त करने योग्य चार उत्कृष्ट अवस्थाओं में से एक है। महायान में अनके बोधिसत्वों की परिकल्पना की गयी है। बोधिसत्व ज्ञान मार्ग पर चलने वाले लोगों की सहायता करते हैं।

सबसे प्रतिष्ठित बोधसत्व को देवता समान माना जाता है, वे हैं – अवलोकितेश्वर, मंजूश्री, वज्रपाणी, आकाशगर्भ, सामंतभद्र, भैषज्यराज और मैत्रेय। देवती तारा जो प्रज्ञा की अवतार हैं। कुछ मूर्तियों में बोधिसत्व के साथ दिखाई गयी हैं। इसे प्रज्ञापारमिता भी कहा जाता है। महायान के अनुयायी प्रज्ञापारमिता, मंजूश्री और अवलोकितेश्वर की उपासना करते थे।

<u>बुद्ध की जीवनी</u> :-

उनका जन्म 563 ईस्वी पूर्व के बीच शाक्य गणराज्य की तत्कालीन राजधानी कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी में हुआ था, जो नेपाल में है। लुम्बिनी वन नेपाल के तराई क्षेत्र में कपिलवस्तु और देवदह के बीच नौतनवा स्टेशन से 8 मील दूर पश्चिम में रुक्मिनदेई नामक स्थान के पास स्थित था। कपिलवस्तु की महारानी महामाया देवी के अपने नैहर देवदह जाते हुए रास्ते में प्रसव पीड़ा हुई और वहीं उन्होंने एक बालक को जन्म दिया। शिशु का नाम सिद्धार्थ रखा गया। गौतम गोत्र में जन्म लेने के कारण वे गौतम भी कहलाए। क्षत्रिय राजा शुद्धोधन उनके पिता थे। परंपरागत कथा के अनुसार सिद्धार्थ की माता का उनके जन्म के सात दिन बाद निधन हो गया था। उनका पालन पोषण उनकी मौसी और शुद्दोधन की दूसरी रानी महाप्रजावती (गौतमी)ने किया। शिशु का नाम सिद्धार्थ दिया गया, जिसका अर्थ है "वह जो सिद्धी प्राप्ति के लिए जन्मा हो"। जन्म समारोह के दौरान, साधु द्रष्टा आसित ने अपने पहाड़ के निवास से घोषणा की-" बच्चा या तो एक महान राजा

या एक महान पवित्र पथ प्रदर्शक बनेगा।" शुद्धोधन ने पांचवें दिन एक नामकरण समारोह आयोजित किया और आठ ब्राह्मण विद्वानों को भविष्य पढ़ने के लिए आमंत्रित किया। सभी ने एक सी दोहरी भविष्यवाणी की, कि बच्चा या तो एक महान राजा या एक महान पवित्र आदमी बनेगा। दक्षिण मध्य नेपाल में स्थित लुंबिनी में उस स्थल पर महाराज अशोक ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व बुद्ध के जन्म की स्मृति में एक स्तम्भ बनवाया था। बुद्ध का जन्म दिवस व्यापक रूप से थएरावदा देशों में मनाया जाता है। सिद्धार्थ का मन वचपन से ही करुणा और दया का स्रोत था। इसका परिचय उनके आरंभिक जीवन की अनेक घटनाओं से पता चलता है। घुड़दौड़ में जब घोड़े दौड़ते और उनके मुँह से झाग निकलने लगता तो सिद्धार्थ उन्हें थका जानकर वहीं रोक देता और जीती हुई बाजी हार जाता। खेल में भी सिद्धार्थ को खुद हार जाना पसंद था क्योंकि किसी को हराना और किसी का दुःखी होना उससे नहीं देखा जाता था। सिद्धार्थ ने चचेरे भाई देवदत्त द्वारा तीर से घायल किए गए हंस की सहायता की और उसके प्राणों की रक्षा की।

शिक्षा एवं विवाह - सिद्धार्थ ने गुरु विश्वामित्र के पास वेद और उपनिषद् को तो पढ़ा हीं , राजकाज और युद्ध-विद्या की भी शिक्षा ली। कुश्ती, घुड़दौड़, तीर-कमान, रथ हाँकने में कोई उसकी बराबरी नहीं कर पाता। सोलह वर्ष की उम्र में सिद्धार्थ का कन्या यशोधरा के साथ विवाह हुआ। पिता द्वारा ऋतुओं के अनुरूप बनाए गए वैभवशाली और समस्त भोगों से युक्त महल में वे यशोधरा के साथ रहने लगे जहाँ उनके पुत्र राहुल का जन्म हुआ। लेकिन विवाह के बाद उनका मन वैराग्य में चला और सम्यक सुख-शांति के लिए उन्होंने आपने परिवार का त्याग कर दिया।

विरक्ति - राजा शुद्धोधन ने सिद्धार्थ के लिए भोग-विलास का भरपूर प्रबंध कर दिया। तीन ऋतुओं के लायक तीन सुंदर महल बनवा दिए। वहाँ पर नाच-गान और मनोरंजन की सारी सामग्री जुटा दी गई। दास-दासी उसकी सेवा में रख दिए गए। पर ये सब चीजें सिद्धार्थ को संसार में बाँधकर नहीं रख सकीं। वसंत ऋतु में एक दिन सिद्धार्थ बगीचे की सैर पर निकले। उन्हें सड़क पर एक बूढ़ा आदमी दिखाई दिया। उसके दाँत टूट गए थे, बाल पक गए थे, शरीर टेढ़ा हो गया था। हाथ में लाठी पकड़े धीरे-धीरे काँपता हुआ वह सड़क पर चल रहा था। दूसरी बार कुमार जब बगीचे की सैर को निकला, तो उसकी आँखों के आगे एक रोगी आ गया। उसकी साँस तेजी से चल रही थी। कंधे ढीले पड़ गए थे। बाँहें सूख गई थीं। पेट फूल गया था। चेहरा पीला पड़ गया था। दूसरे के सहारे वह बड़ी मुश्किल से चल पा रहा था। तीसरी बार सिद्धार्थ को एक अर्थी मिली। चार आदमी उसे उठाकर लिए जा रहे थे। पीछे-पीछे बहुत से लोग थे। कोई रो रहा था, कोई छाती पीट रहा था, कोई अपने बाल नोच रहा था। इन दृश्यों ने सिद्धार्थ को बहुत विचलित किया। उन्होंने सोचा कि 'धिक्कार है जवानी को, जो जीवन को सोख लेती है। धिक्कार है स्वास्थ्य को, जो शरीर को नष्ट कर देता है। धिक्कार है जीवन को, जो इतनी जल्दी अपना अध्याय पूरा कर देता है। क्या बुढ़ापा, बीमारी और मौत सदा इसी तरह होती रहेगी सौम्य? चौथी बार कुमार बगीचे की सैर को

निकला, तो उसे एक संन्यासी दिखाई पड़ा। संसार की सारी भावनाओं और कामनाओं से मुक्त प्रसन्नचित्त संन्यासी ने सिद्धार्थ को आकृष्ट किया।

महाभिनिष्क्रमण - सुंदर पत्नी यशोधरा, दुधमुँहे राहुल और कपिलवस्तु जैसे राज्य का मोह छोड़कर सिद्धार्थ तपस्या के लिए चल पड़े। वह राजगृहपहुँचे। वहाँ भिक्षा माँगी। सिद्धार्थ घूमतेघूमते आलार कालाम और उद्दक रामपुत्र के पास पहुँचे। उनसे योगसाधना सीखी। समाधि लगाना सीखा। पर उससे उसे संतोष नहीं हुआ। वह उरुवेला पहुँचे और वहाँ पर तरहतरह से तपस्या करने लगे।

सिद्धार्थ ने पहले तो केवल तिल-चावल खाकर तपस्या शुरू की, बाद में कोई भी आहार लेना बंद कर दिया। शरीर सूखकर काँटा हो गया। छः साल बीत गए तपस्या करते हुए। सिद्धार्थ की तपस्या सफल नहीं हुई। शांति हेतु बुद्ध का मध्यम मार्ग: एक दिन कुछ स्त्रियाँ किसी नगर से लौटती हुई वहाँ से निकलीं, जहाँ सिद्धार्थ तपस्या कर रहा थे। उनका एक गीत सिद्धार्थ के कान में पड़ा- 'वीणा के तारों को ढीला मत छोड़ दो। ढीला छोड़ देने से उनका सुरीला स्वर नहीं निकलेगा। पर तारों को इतना कसो भी मत कि वे टूट जाएँ।' बात सिद्धार्थ को जँच गई। वह मान गये कि नियमित आहार-विहार से ही योग सिद्ध होता है। अति किसी बात की अच्छी नहीं। किसी भी प्राप्ति के लिए मध्यम मार्ग ही ठीक होता है ओर इसके लिए कठोर तपस्या करनी पड़ती है।

ज्ञान की प्राप्ति - बुद्ध के प्रथम गुरु आलार कलाम थे,जिनसे उन्होंने संन्यास काल में शिक्षा प्राप्त की ।३५ वर्ष की आयु में वैशाखी पूर्णिमा के दिन सिद्धार्थ पीपल वृक्ष के नीचे ध्यानस्थथे। बुद्ध ने बोधगया में निरंजना नदी के तट पर कठोर तपस्या की तथा सुजाता नामक लड़की के हाथों खीर खाकर उपवास तोड़ा। समीपवर्ती गाँव की एक स्त्री सुजाता को पुत्र हुआ।वह बेटे के लिए एक पीपल वृक्ष से मन्नत पूरी करने के लिए सोने के थाल में गाय के दूध की खीर भरकर पहुँची। सिद्धार्थ वहाँ बैठा ध्यान कर रहा था। उसे लगा कि वृक्षदेवता ही मानो पूजा लेने के लिए शरीर धरकर बैठे हैं। सुजाता ने बड़े आदर से सिद्धार्थ को खीर भेंट की और कहा- 'जैसे मेरी मनोकामना पूरी हुई उसी तरह आपकी भी हो।' उसी रात को ध्यान लगाने पर सिद्धार्थ की साधना सफल हुई। उसे सच्चा बोध हुआ। तभी से सिद्धार्थ 'बुद्ध' कहलाए। जिस पीपल वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ को बोध मिला वह बोधिवृक्षकहलाया और गया का समीपवर्ती वह स्थान बोधगया।

धर्म-चक्र-प्रवर्तन - वे 80 वर्ष की उम्र तक अपने धर्म का संस्कृत के बजाय उस समय की सीधी सरल लोकभाषा पाली में प्रचार करते रहे। उनके सीधे सरल धर्म की लोकप्रियता तेजी से बढ़ने लगी। चार सप्ताह तक बोधिवृक्ष के नीचे रहकर धर्म के स्वरूप का चिंतन करने के बाद बुद्ध धर्म का उपदेश करने निकल पड़े। आषाढ़ की पूर्णिमा को वे काशी के पास मृगदाव (वर्तमान में सारनाथ) पहुँचे। वहीं पर उन्होंने सर्वप्रथम धर्मोपदेश दिया और प्रथम पाँच मित्रों को अपना अनुयायी बनाया और फिर उन्हें धर्म प्रचार करने के लिये भेज दिया। महाप्रजापती गौतमी (बुद्ध

की विमाता) को सर्वप्रथम बौद्ध संघ मे प्रवेश मिला।आनंद,बुद्ध का प्रिय शिष्य था। बुद्ध आनंद को ही संबोधित करके अपने उपदेश देते थे।

महापरिनिर्वाण - पालि सिद्धांत के महापरिनिर्वाण सुत्त के अनुसार ८० वर्ष की आयु में बुद्ध ने घोषणा की कि वे जल्द ही परिनिर्वाण के लिए रवाना होंगे। बुद्ध ने अपना आखिरी भोजन, जिसे उन्होंने कुन्डा नामक एक लोहार से एक भेंट के रूप में प्राप्त किया था, ग्रहण लिया जिसके कारण वे गंभीर रूप से बीमार पड़ गये। बुद्ध ने अपने शिष्य आनंद को निर्देश दिया कि वह कुन्डा को समझाए कि उसने कोई गलती नहीं की है। उन्होने कहा कि यह भोजन अतुल्य है।

बौद्ध धर्म की मान्यताएं - बौद्ध धर्म में वैदिक धर्म और जैन धर्म से काफी समानताएं हैं। वैदिक व जैन धर्म की तरह ही बौद्ध धर्म में मोक्ष प्राप्ति को जीवन का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य बताया गया है। जैन धर्म की भाँती आरंभ में बौद्ध धर्म में भी मूर्ति पूजा नहीं की जाती थी, परन्तु बाद में बौद्ध धर्म में भी मूर्ति पूजा शुरू हो गयी।

बुद्ध ने पुरातनवादी दृष्टिकोण का खंडन किया, जो नयी सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था के स्थायित्व और नए विचारों के उदय में अवरोध उत्पन्न कर रहा था। बुद्ध ने जातिगत वर्ण व्यवस्था व कर्मकांडों का खंडन किया था। जैन धर्म की भाँती बौद्ध धर्म में भी अहिंसा का सिद्धांत काफी महत्वपूर्ण है।

अष्टांगिक मार्ग - बुद्ध के अनुसार इच्छाएं मनुष्य के जीवन में दुखों का कारण है। इन दुखों से मुक्ति पाने और आत्म-ज्ञान की प्राप्ति के लिए अष्टांगिक मार्ग एक महत्वपूर्ण साधन है। अष्टांगिक मार्ग निम्नलिखित हैं :

1. सम्यक दर्शन – चार सत्य पर विश्वास
2. सम्यक संकल्प – मानसिक और नैतिक विकास का संकल्प
3. सम्यक वाक् – झूठ न बोलना तथा वाणी से किसी को कष्ट न पहुँचाना
4. सम्यक कर्म – किसी को अपने कर्म से पीड़ा न पहुँचाना
5. सम्यक जीविका – जीविकोपार्जन से किसी अन्य को हानि न हो
6. सम्यक प्रयास – स्वयं को बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत रहना
7. सम्यक स्मृति – ज्ञान को समझाने के लिए बुद्धि उपयोग
8. सम्यक समाधी – निर्वाण प्राप्त करना